eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 09, September 2022

तुलसीदास जी के महाकाव्य रामचरितमानस में नारी चित्रण

[1]डा0 प्रियंका रानी
[1]सहायक प्रोफेसर हिन्दी, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0

Received: 15 September 2022 Accepted and Reviewed: 25 September 2022, Published : 30 September 2022

Abstract

तुलसीदास कृत रामचरितमानस भारतीय संस्कृति, धर्म और सामाजिक मूल्यों का अद्वितीय ग्रंथ है। इस महाकाव्य में नारी पात्रों का चित्रण अत्यंत सूक्ष्म, भावनात्मक और वैचारिक रूप से समृद्ध है। यह शोध पत्र तुलसीदास के रामचरितमानस में वर्णित स्त्री पात्रों जैसे सीता, कौसल्या, सुमित्रा, कैकेयी, मंथरा, अरण्य कन्याएँ, और अन्य स्त्रियों के माध्यम से तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति, भूमिका, गुण एवं उनके प्रति दृष्टिकोण का विश्लेषण करता है। साथ ही यह तुलसीदास के दृष्टिकोण को धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक संदर्भों में समझने का प्रयास करता है।

बीज शब्द – तुलसीदास, रामचरितमानस, नारी चित्रण, स्त्री विमर्श, धार्मिक साहित्य, सीता, सामाजिक संरचना, भारतीय संस्कृति

Introduction

भारतीय साहित्य में रामचरितमानस एक अद्वितीय और कालजयी काव्य कृति के रूप में प्रतिष्ठित है। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित यह ग्रंथ जहाँ एक ओर रामकथा की पुनर्रचना करता है, वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज की सांस्कृतिक, धार्मिक और नैतिक धारणाओं का भी दस्तावेज़ प्रस्तुत करता है। रामचरितमानस में वर्णित पुरुष पात्रों के साथ–साथ नारी पात्रों का चित्रण भी अत्यंत महत्वपूर्ण और विचारणीय है। यह ग्रंथ नारी की मर्यादा, आदर्श, कर्तव्यबोध, त्याग और संघर्ष को जिस गहराई और व्यापकता से प्रस्तुत करता है, वह तुलसीदास की संवेदनशीलता और सामाजिक दृष्टिकोण को प्रकट करता है। नारी पात्रों की भूमिका केवल पारंपरिक स्त्रीधर्म तक सीमित नहीं है, बल्कि वे सामाजिक और आध्यात्मिक परिवर्तनों की संवाहिका भी हैं। सीता, कौसल्या, सुमित्रा, कैकेयी, मंथरा, शबरी, अहिल्या आदि चरित्रों के माध्यम से तुलसीदास ने नारी जीवन की विविध अवस्थाओं और उनके मनोवैज्ञानिक पहलुओं का सजीव चित्रण किया है। प्रत्येक पात्र एक विशिष्ट सामाजिक और धार्मिक अवधारणा को प्रस्तुत करता है। इस शोध पत्र के माध्यम से हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि तुलसीदास की काव्य दृष्टि में नारी की क्या भूमिका रही है, वे किस प्रकार नारी को देखते हैं, उनकी नारी विषयक अवधारणा क्या है, और यह अवधारणा तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति को कैसे प्रतिबिंबित करती है। साथ ही यह शोध समकालीन स्त्री विमर्श की दृष्टि से तुलसीदास के नारी चित्रण का मूल्यांकन करने का प्रयास करेगा।

तुलसीदास जी का युग और स्त्री की स्थिति– तुलसीदास का जीवनकाल 16वीं शताब्दी में हुआ, जो भारतीय इतिहास में गहन सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परिवर्तनों का समय था। यह काल एक ओर मध्यकालीन भारतीय समाज में राजनीतिक अस्थिरता, विदेशी आक्रमणों और सामाजिक विघटन का काल था, वहीं दूसरी ओर भक्ति आंदोलन के रूप में एक गहन धार्मिक जागरण भी देखा गया।

इस युग में समाज वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित था, जिसमें स्त्रियों की स्थिति द्वितीयक मानी जाती थी। उन्हें शिक्षा, संपत्ति के अधिकार और सामाजिक भागीदारी से वंचित रखा गया था। विवाह पूर्व जीवन पर कठोर नियंत्रण और विधवा जीवन पर सामाजिक निषेध प्रमुख थे। समाज में सती प्रथा, बाल विवाह और पर्दा प्रथा जैसे कुप्रथाओं का बोलबाला था।

इस युग की नारी को चारदीवारी के भीतर सीमित कर दिया गया था। उसका प्रमुख कर्तव्य था, पतिव्रता धर्म का पालन करना, संतान उत्पत्ति और पालन–पोषण करना तथा परिवार की मर्यादा का निर्वहन करना। सामाजिक दृष्टिकोण से नारी पुरुष के अधीन थी और उसकी पहचान भी पुरुष से ही निर्धारित होती थी, जैसे कि किसी की बेटी, पत्नी या माता। स्त्रियों के लिए धर्मग्रंथों में मर्यादा निर्धारित की गई थी, जिन्हें पालन करना अनिवार्य था। नारी का सर्वोच्च आदर्श पतिव्रता धर्म माना जाता था। समाज में प्रचलित विचार यह था कि नारी स्वयं निर्णय नहीं ले सकती, अतः उसे सदैव किसी पुरुष (पिता, पति, पुत्र) के अधीन रहना चाहिए।

भक्ति आंदोलन ने इस रूढ़िपरक व्यवस्था को चुनौती देने का कार्य किया। संत कबीर, मीराबाई, चौतन्य महाप्रभु, तुलसीदास जैसे भक्तों ने भक्ति को जन्म, जाति और लिंग से ऊपर माना। यद्यपि तुलसीदास ने नारी की स्वतंत्रता पर खुलकर विचार नहीं रखा, परंतु उन्होंने नारी को धार्मिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत अवश्य माना। मीराबाई जैसी भक्त कवयित्रियों ने स्त्री की स्वतंत्र पहचान की बात की और अपने जीवन में उसका साहसिक प्रयोग भी किया। तुलसीदास के समकालीन समाज में इन स्त्रियों की भूमिका क्रांतिकारी मानी जाती है। इनकी उपस्थिति भक्ति आंदोलन को अधिक समावेशी और मानवीय बनाती है। तुलसीदास मूलतः एक धार्मिक कवि थे जिनकी दृष्टि समाज सुधार की अपेक्षा आध्यात्मिक उन्नयन पर केंद्रित थी। उन्होंने नारी को एक ओर त्याग, मर्यादा, सहनशीलता और सेवा की मूर्ति के रूप में देखा, वहीं दूसरी ओर नारी के प्रति कुछ कठोर एवं सीमित विचार भी व्यक्त किए। उनके कुछ प्रसिद्ध दोहे जैसे– ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी। को आज के स्त्री विमर्श में आलोचना का विषय बनाया गया है। परंतु यह ध्यान रखना आवश्यक है कि तुलसीदास की स्त्री संबंधी अवधारणा उस समय के सामाजिक ढांचे से प्रभावित थी। रामचरितमानस में सीता का चरित्र नारी के लिए एक उच्च आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो प्रेम, त्याग, समर्पण और बलिदान की मूर्ति है। इसी प्रकार कौसल्या, सुमित्रा, शबरी, अहिल्या आदि पात्रों में भी तुलसीदास ने नारी के विविध रूपों को चित्रित किया है।

तुलसीदास की दृष्टि में नारी वह शक्ति है जो पुरुष को धर्म और कर्तव्य की ओर प्रेरित करती है। यद्यपि उनके विचार आज के मानकों पर पूरी तरह आधुनिक नहीं कहे जा सकते, फिर भी उनका साहित्य हमें यह समझने में सहायता करता है कि तत्कालीन समाज में नारी की क्या भूमिका थी और वह किस प्रकार धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों की संवाहिका थी।

सीता – आदर्श पत्नी और पतिव्रता की प्रतिमूर्ति (जनकनंदिनी से मिथिला की रानी तक) – सीता का जन्म जनकपुर के राजा जनक के घर हुआ। उन्हें सीता इस कारण कहा गया क्योंकि वे धरती की कोख से उत्पन्न हुई थीं, सीता का शाब्दिक अर्थ है हल की नोक से उत्पन्न। तुलसीदास ने सीता को पृथ्वी की संतान और प्रकृति की गोद से जन्मी शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। मिथिला की राजकुमारी होते हुए

भी उनमें अभिमान का नामोनिशान नहीं था। वे स्वभाव से विनम्र, गुणशील और धर्मपरायण थीं। तुलसीदास ने सीता के स्वयंवर प्रसंग में उनकी विवेकशीलता, समर्पण और भगवान राम के प्रति आस्था को अत्यंत सुंदर रूप में प्रस्तुत किया है। वे केवल बाह्य सौंदर्य से नहीं, बल्कि राम के चरित्र, मर्यादा और गुणों से आकर्षित होती हैं। यह तुलसीदास की स्त्री दृष्टि को दर्शाता है, जिसमें स्त्री के पास चयन की समझ और नैतिक discernment की क्षमता होती है।

सीता ने अयोध्या के राजसी वैभव को त्यागकर राम के साथ वनवास का मार्ग चुना। यह निर्णय नारी के रूप में उनके समर्पण, पति धर्म के प्रति निष्ठा और साहस को दर्शाता है। तुलसीदास के अनुसार, यह त्याग केवल एक स्त्री का नहीं, अपितु सम्पूर्ण नारी जाति के तपस्वी स्वरूप का प्रतीक है। वन में सीता का जीवन तपस्विनी की भांति था, वे कष्टों को स्वीकारती हैं, लेकिन कभी अपने धर्म से विचलित नहीं होतीं। जब रावण उनका हरण करता है, तो वे उसकी सभी प्रलोभनों को ठुकराकर अपने चरित्र की शुचिता बनाए रखती हैं। लंका में रहते हुए सीता का संयम, आत्मबल और धार्मिक दृढ़ता तुलसीदास की लेखनी में विशिष्ट रूप से अंकित है। अग्निपरीक्षा के प्रसंग में तुलसीदास ने सीता को अग्नि जैसी पवित्र और निर्विवाद नारी के रूप में प्रस्तुत किया है। यहाँ उनका चित्रण एक ऐसी स्त्री के रूप में होता है, जो न केवल पति के प्रति निष्ठावान है, बल्कि अपने आत्मबल से भी युक्त है। यह अग्निपरीक्षा स्त्री की मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक बन जाती है।

सीता का चरित्र एक आदर्श धर्मपत्नी के रूप में वर्णित है, जो पति के लिए अपने अस्तित्व का अर्पण करने में भी संकोच नहीं करती। तुलसीदास ने उन्हें केवल पति के अनुकरण में चलने वाली नारी नहीं दिखाया, बल्कि राम की प्रेरणा, विश्वास और नैतिक बल के रूप में प्रस्तुत किया। लव और कुश की माता के रूप में वे एक आदर्श माँ हैं, जो अपने पुत्रों को मर्यादा, धर्म और स्वाभिमान का पाठ पढ़ाती हैं। वाल्मीकि आश्रम में उनका मातृत्व, त्याग और धैर्यपूर्ण जीवन, एक नारी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का चित्रण है। जब राम उन्हें पुनः स्वीकार करना चाहते हैं, तो वे धरती की गोद में समा जाती हैं, यह बलिदान नारी गरिमा और आत्मसम्मान की पराकाष्ठा है।

तुलसीदास की दृष्टि में सीता केवल एक पत्नी या रानी नहीं, बल्कि मर्यादा की मूर्ति, धर्म की साक्षात प्रतिमा और स्त्रीत्व की पराकाष्ठा हैं। वे केवल राम की पत्नी नहीं, बल्कि राम के आदर्श की संवाहिका हैं। तुलसीदास उन्हें जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान के आदर्श के रूप में देखते हैंकृजो त्याग, सेवा, सहनशीलता और आत्मबल का प्रतीक हैं। रामचरितमानस के माध्यम से तुलसीदास ने सीता के चरित्र को नारी जीवन के उच्चतम आदर्शों से जोड़ा है। वे नारी की उस शक्ति को सामने लाते हैं, जो पुरुष को भी धर्म और मर्यादा के पथ पर चलने की प्रेरणा देती है। उनका चित्रण आज भी भारतीय नारी की पहचान और आदर्श का स्रोत बना हुआ है।

अन्य स्त्री पात्रों का मूल्यांकन– कौसल्या का चरित्र एक आदर्श माता और धर्मपरायण रानी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। राम के जन्म पर उनका उत्साह, त्याग और शांत स्वभाव नारी के उस रूप को दर्शाता है जो परिवार और समाज में स्थायित्व की भावना भरता है। तुलसीदास ने उन्हें धैर्य, भक्ति और ममता की प्रतिमूर्ति के रूप में चित्रित किया है। उनके व्यवहार में कहीं भी अधिकार की अपेक्षा नहीं है, बल्कि शालीनता और त्याग प्रमुख हैं। वे राम को धर्म और मर्यादा के पथ पर प्रेरित करने वाली शक्ति हैं।

सुमित्रा के चरित्र को तुलसीदास ने बहुत संयमित लेकिन प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता के रूप में वे एक ऐसी माता हैं, जो अपने पुत्र को राम के साथ वनवास भेजने में संकोच नहीं करतीं। उनका संवाद जिअ लखनु रामकाज लगि तजहु अवध की कांति न केवल त्याग का परिचायक है, बल्कि नारी के भीतर विद्यमान विवेक, कर्तव्यबोध और धर्म की समझ को भी प्रकट करता है। वे मातृत्व के उच्चतम आदर्श को प्रस्तुत करती हैं।

कैकेयी का चरित्र तुलसीदास के रामचरितमानस में नारी के द्वंद्वात्मक स्वरूप को प्रस्तुत करता है। एक ओर वह राम से स्नेह करने वाली माता है, वहीं दूसरी ओर भरत के लिए राज्य की मांग कर क्रूरता का परिचय देती है। मंथरा की सलाह पर वह दो वर मांगती है, राम का वनवास और भरत का राज्याभिषेक। यह प्रसंग नारी मन की जटिलता, मातृत्व और महत्वाकांक्षा के टकराव को दर्शाता है। तुलसीदास ने कैकेयी के व्यवहार को नारी की एक ऐसी मानसिक अवस्था के रूप में प्रस्तुत किया है, जो प्रेम और स्वार्थ के बीच झूलती है।

मंथरा का चरित्र नकारात्मक छवि प्रस्तुत करता है, परंतु उसकी भूमिका को केवल व्यक्तिगत दुर्भावना तक सीमित नहीं किया जा सकता। वह सामाजिक संरचना में उस स्त्री को दर्शाती है जो सत्ता के समीप रहते हुए भी अपनी असुरक्षा से प्रेरित होकर निर्णायक भूमिका निभाती है। मंथरा का संवाद, उसकी चातुर्य और राजनीतिक दृष्टिकोण नारी के एक जटिल और रणनीतिक पक्ष को प्रस्तुत करता है। तुलसीदास ने भले ही उसे श्कुबुद्धिश कहा हो, परंतु उसका प्रभाव पूरे रामकथा की दिशा बदल देता है।

श्रवण माता का प्रसंग तुलसीदास ने सीधे नहीं वर्णित किया, परंतु उनके पुत्र श्रवण कुमार की सेवा भावना उनके माता–पिता की छवि को आदर्श रूप में प्रस्तुत करती है। वे सेवा, ममता और मातृत्व का प्रतीक हैं। शबरी भक्ति, समर्पण और जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर प्रभु प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं। उनका चरित्र यह दर्शाता है कि नारी किसी भी वर्ग या जाति की हो, यदि उसमें आस्था और श्रद्धा है, तो वह ईश्वर को प्राप्त कर सकती है। शबरी का राम के लिए जूठे बेर अर्पित करना उनकी निष्कलंक भक्ति का प्रतीक है।

अहिल्या पत्थर बन चुकी एक स्त्री हैं जो शापित हैं, परंतु राम के स्पर्श से पुनः मानव रूप में लौट आती हैं। यह प्रसंग सामाजिक दृष्टि से नारी की पवित्रता और पुनरुत्थान का प्रतीक है। तुलसीदास ने अहिल्या को पुनर्जीवन देकर नारी गरिमा की पुनर्स्थापना का संदेश दिया है।

तुलसीदास की नारी विषयक दृष्टि– तुलसीदास का नारी के प्रति दृष्टिकोण गहराई से धार्मिक है। वे नारी को गृह लक्ष्मी, धर्मपत्नी, और पतिव्रता के रूप में देखते हैं। उनके अनुसार, नारी का सर्वोच्च धर्म अपने पति की सेवा, व्रत, तप और निष्ठा है। उदाहरणस्वरूप, सीता का वनगमन और राम के प्रति उनकी अटल निष्ठा को तुलसीदास ने स्त्री के लिए आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है। रामचरितमानस की अधिकांश स्त्रियाँ धर्म, भक्ति और मर्यादा के प्रतीक के रूप में चित्रित हैं। तुलसीदास का समाज पितृसत्तात्मक संरचना पर आधारित है, जहाँ पुरुष प्रधानता है। फिर भी, वे नारी को केवल पराश्रयी नहीं मानते। वे नारी को समाज का आधार स्तंभ मानते हैं। उनके अनुसार, यदि नारी धर्मपरायण और चरित्रवान है, तो परिवार और समाज दोनों की स्थिरता बनी रहती है। सीता, कौसल्या, सुमित्रा जैसी नारियाँ सामाजिक संतुलन बनाए रखने वाली शक्तियाँ हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 09, September 2022

तुलसीदास के अनुसार, नारी का चारित्रिक बल ही उसकी वास्तविक शक्ति है। उनके रामचरितमानस में नारी का नैतिक पक्ष अत्यंत प्रभावशाली है। चाहे वह सीता की अग्निपरीक्षा हो या शबरी की प्रतीक्षा, तुलसीदास ने नारी की आत्मिक शक्ति को पुरुषों से भी ऊँचा स्थान दिया है। वे यह भी मानते हैं कि यदि नारी पतनशील हो जाए, तो समाज के मूल्यों का ह्रास होना निश्चित है, जैसा कि मंथरा के माध्यम से दर्शाया गया है। तुलसीदास के लिए नारी केवल सांसारिक सत्ता नहीं, बल्कि भक्ति की वाहक भी है। शबरी, अहिल्या, सीता जैसी स्त्रियाँ भगवान की कृपा और आत्मिक उन्नति की पात्र बनती हैं। राम द्वारा अहिल्या का उद्धार इस बात का प्रमाण है कि नारी भी मोक्ष की अधिकारी है। तुलसीदास की आध्यात्मिक दृष्टि नारी के प्रति सम्मान और श्रद्धा का भाव रखती है।

तुलसीदास का स्त्री विमर्श पर प्रभाव–

तुलसीदास का नारी चित्रण पारंपरिक मर्यादा और धर्म आधारित है। वे स्त्री की स्वतंत्रता की अपेक्षा उसकी मर्यादा और पतिव्रता धर्म पर बल देते हैं। उनका स्त्री विमर्श आदर्शवादिता से युक्त है, जो आधुनिक स्त्री विमर्श की स्वतंत्रता, अधिकार और समानता की अवधारणाओं से भिन्न है। फिर भी, उनकी स्त्री पात्रों में त्याग, सहनशीलता और साहस की जो भावना है, वह उन्हें शक्तिशाली बनाती है।

आधुनिक स्त्री विमर्श के अनुसार तुलसीदास का दृष्टिकोण सीमित प्रतीत हो सकता है, परंतु यदि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों में देखा जाए, तो तुलसीदास ने नारी को उच्चतम आध्यात्मिक दर्जा दिया है। उनका स्त्री पात्र केवल अबला नहीं, अपितु प्रभावशाली भी है, जो निर्णय ले सकती है, संघर्ष कर सकती है और आदर्श स्थापित कर सकती है।

तुलसीदास कृत रामचरितमानस में नारी का चित्रण बहुआयामी है वह एक ओर पारंपरिक आदर्शों की प्रतिमूर्ति है, तो दूसरी ओर आत्मिक शक्ति और साहस की परिचायक। तुलसीदास ने नारी को समाज और धर्म की धुरी के रूप में देखा है। उनकी दृष्टि में नारी त्याग, भक्ति, कर्तव्य और प्रेम का मूर्त रूप है। यद्यपि उनका दृष्टिकोण आधुनिक स्त्री विमर्श से भिन्न है, तथापि उनकी काव्य दृष्टि में नारी को उपेक्षित नहीं किया गया है, अपितु सम्मान और गरिमा प्रदान की गई है।

संदर्भ सूची–

1. तुलसीदास, रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास कृत, गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन।
2. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन।
3. नामवर सिंह, कविता के नये प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन।
4. विद्यानिवास मिश्र, संस्कृति और साहित्य, साहित्य अकादमी।
5. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन।
6. डॉ. विजयपाल सिंह, गोस्वामी तुलसीदास और उनका काव्य, भारत पुस्तक भण्डार।
7. चंचल कुमार शर्मा, स्त्री विमर्श और तुलसी साहित्य, समन्वय प्रकाशन।